मुख्यालय, नयी दिल्ली ने प्रायोजित किया। वर्ष के दौरान 76बाहर से निधियन परियोजनाएं और 32 नेटवर्क परियोजनाएं थी। पीएमई प्रकोष्ठ प्रबंधन के साथ-साथ संबंद्ध वैज्ञानिकों को बाहर से प्रायोजित परियोजनाओं की सूचना प्रदान करने का प्रमुख केंद्र है। प्रबंधन की सहायता और अन्य उद्देश्यों के लिए विभिन्न परियोजनाओं की सूचनाओं का नियमित अद्यतन किया गया। सामग्रियों की खरीद की प्रक्रिया शुरू करना और प्रयोगशाला नोटबुक का रखरखाव पीएमई सेल की प्रमुख गतिविधियों में से एक है।

पीएमई प्रकोष्ठ निम्नलिखित गतिविधियों से गंभीरतापूर्वक जुड़ा है :

(1) बाहरी राशि का आगमन (ईसीएफ) : फंडिग एजेंसियों से प्राप्त निधियों का नियमित रूप से विवरण रखा गया और इस पर निगरानी रखी गयी। संस्थान की विभागानुसार मासिक ईसीएफ स्थिति की विवरणियां सरकारी विभागों, सार्वजनिक व निजी संगठनों से प्राप्तियों का उल्लेख करते हुए तैयार की गयी। संस्थान की वित्तीय वर्ष 2012-13 के दौरान कुल ईसीएफ 678.85 लाख रुपये थी, जिसमें सरकारी विभागों/मंत्रालयों, सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योगों और निजी क्षेत्र के संगठनों से क्रमश: 91.47 प्रतिशत, 4.58प्रतिशत और 3.74 प्रतिशत प्राप्तियां शामिल है। ईसीएफ का वाणिज्यिक मूल्य 56.44 लाख रुपये था, जो कुल ईसीएफ का 4.58प्रतिशत था। विभिन्न परियोजनाओं और सेवाओं से संस्थान की ईसीएफ नीचे दर्शायी गयी हैं :-

बाह्य नकदी प्रवाह (ईसीएफ)

(सेवा कर को छोड़कर) (लाख रुपये में)

क्र. सं.	श्रेणी	सरकारी	भारतीय उद्योग	◦ सीपीएसई	∞ एसपीएसई	विदेशी कंपनी	विदेशी एजेंसी	अन्य	कुल
1	साझा	0.000	0.000	0.000	0.000	0.000	0.000	0.000	0.000
2	शो. व वि. परामर्शी	15.414	8.374	0.000	9.699	0.000	0.000	0.000	33.487
3	सहायता अनुदान	598.038	1.386	16.000	0.000	0.000	0.000	0.000	615.424
4	प्रीमिया	0.000	1.970	0.000	0.000	0.000	0.000	0.000	1.970
5	रायल्टी	0.000	0.081	0.000	0.000	0.000	0.000	0.000	0.081
6	प्रायोजित शो. व वि.	0.000	0.000	0.000	0.000	0.000	0.000	0.000	0.000
7	तकनीकी सेवा	4.981	10.976	2.172	1.532	0.000	1.296	0.000	20.957
	कुल	618.433	22.787	18.172	11.231	0.000	1.296	0.000	671.919

◦ सीपीएसई : केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रम
∞ एसपीएसई : राज्य सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रम

क्षेत्रवार ईसीएफ इस प्रकार है :-

क्षेत्र	ईसीएफ
एग्रो प्रौद्योगिकी	57.39
जैविक विज्ञान	106.17
रसायन विज्ञान	43.03
इंजीनियरी विज्ञान	78.44
विस्तार केंद्र	48.91
भू-विज्ञान	68.64
प्रबंधन विज्ञान	40.63
सामग्री विज्ञान	235.65
कुल	678.85

(2) खर्च पर निगरानी : परियोजनाओं से संबंधित सभी खर्च को पीएमई प्रकोष्ठ से होकर गुजरना पड़ता है। प्रकोष्ठ सभी बाहर से प्रायोजित और नेटवर्क परियोजनाओं पर खर्च, बजट आवंटन पर निगरानी रखता है तथा प्राप्ति व खर्च के विवरण को पीएमई पोर्टल पर अपलोड करता है, ताकि प्रभावी प्रबंधन के लिए संबंधित पीआई और प्रबंधन को किसी परियोजना की निधि की स्थिति का आसानीसे पता चल जाये। इकाई बाहर से प्रायोजित परियोजनाओं के लिए उपयोगिता प्रमाण-पत्र और खर्च के बयान को जारी करने में भी मदद करता है।

(3) सेवा कर : पीएमई प्रकोष्ठ ने प्रयोगशाला द्वारा प्रदत्त विभिन्न सेवा से देय और उपार्जित सेवा कर की गणना का कार्य मासिक आधार पर किया। वर्ष 2012-13 के दौरान कुल वसूल सेवा कर (12.36प्रतिशत की दर से) 6.96लाख रुपये है, जो निम्नलिखित विभिन्न शीर्षो से प्राप्त हुआ।

श्रेणी	सेवा कर (लाख रुपये में)
परामर्शी परियोजनाएं	4.14
परीक्षण प्रभार	2.35
प्रीमिया	0.24
रायल्टी	0.10
विविध	0.22
कुल	6.96

(4) परियोजना स्थिति : संविदा की गयी और 2012-13 के दौरान पूर्ण की गयी परियोजनाओं की स्थिति निम्नानुसार हैं :-

क्र.सं.	स्रोत	संविदा की गयी परियोजनाएं		पूरी की गयी परियोजनाए	
	परियोजना	संविदा मूल्य (लाख रुपये में)	परियोजनाओं की संख्या	संविदा मूल्य (लाख रुपये में)	परियोजनाओं की संख्या
1.	सहायता अनुदान	658.42	18	283.20	15
2.	परामर्शी	26.69	03	7.87	1
	कुल	**685.11**	**21**	**291.07**	**16**

(5) लेखा-परीक्षा सवाल : प्रकोष्ठ बाहर से प्रायोजित परियोजनाओं के संदर्भ में विभिन्न लेखा-परीक्षा सवालों (आईएसओ, आंतरिक व बाह्य), संसदीय सवालों और राज्यसभा के गैरतारांकित सवालों का जवाब देता है। वर्ष के दौरान 10 आईएसओ, 4 आंतरिक, 19 वाह्य लेखा और 1 संसद के सवाल का जवाब दिया गया।

(6) प्रयोगशाला आरक्षित निधि में योगदान : पीएमई प्रकोष्ठ ने चालू और समाप्त निधियन परियोजनाओं से 38.0 लाख रुपये की अतिरिक्त और गैर-वापसनीय की शेष राशि के एलआरएफ के अंतरण की वित्तीय वर्ष 2012-13 में पहल की।

(7) अनुसंधान उपयोग आंकड़े : बाह्य निधियन एजेंसियों द्वारा परियोजनाओं और अन्य कार्यकलापों से उपार्जित राजस्व से संबंधित अनुसंधान उपयोग आंकड़े संस्थान में रखे जाते हैं। एक वार्षिक रिपोर्ट और चार तिमाही रिपोर्ट सीएसआईआर मुख्यालय को नियमित रूप से भेजी गयी।

(8) भावी परियोजनाएं : प्रत्येक शोध परियोजना के प्रस्ताव जमा करने से लेकर प्रायोजन एजेंसी तक भेजने तक को पीएमई प्रकोष्ठ से होकर गुजरना पड़ता है।

(9) पीएमई वेबसाइट : पीएमई प्रकोष्ठ सभी परियोजनाओं से संबंधित रिपोर्टों को ऑनलाइन प्रदर्शन के लिए एक वेबसाइट का संचालन कर रहा है। पीएमई वेवसाइट निस्ट के इंट्रानेट से जुड़ा है और फिलहाल इसमें परियोजनाओं (पूरी की गयीं, चल रहीं, आरंभिक चरण में) से संबंधित रिपोर्टें, शोध उपयोगिता आंकड़े, बाहरी निधि प्रवाह, सभी चल रही प्रायोजित और नेटवर्क परियोजनाओं के खर्च का विवरण, सेवा कर, सांगठनिक ढांचा, परियोजना मूल्यांकन, कंप्यूटर एएमसी, केंद्रीय निगरानी योजना प्रणाली आदि को प्रदर्शित किया जा रहा है। परियोजनाओं के प्रमुख जांचकर्ता पीएमई पोर्टल के जरिए अपनी परियोजनाओं पर किये जा रहे खर्च की ऑनलाइन निगरानी रख सकते हैं। प्रायोजित परियोजनाओं के नतीजों के विश्लेषण के लिए ऑनलाइन फार्म तैयार किया गया है और प्रमुख जांचकर्ताओं को उनकी परियोजनाओं के पूरी होने पर इसे भरना पड़ता है। उपलब्ध ऑनलाइन रिपोर्टें प्रबंधन और वैज्ञानिकों के लिए सक्षम तकनीकी सहायता साबित हुई हैं।

(10) सभी कंप्यूटरों का वार्षिक रखरखाव ठेका : प्रकोष्ठ संस्थान के करीब 300 कंप्यूटरों और इसके परिसर के वार्षिक रखरखाव ठेके के प्रबंधन की देखभाल करता है। इसके अलावा करीब 122 कंप्यूटर वारंटी के अंतर्गत हैं।

(11) ईआरपी प्रणाली : प्रतिष्ठान संसाधन योजना (ईआरपी) प्रणाली के सात तरीके हैं। इनके नाम मानव संसाधन, ई-शिक्षण, शोध एवं विकास, नीति और कार्यक्रम, सामग्री प्रबंधन, वित्त प्रबंधन और परियोजना प्रबंधन हैं। पीएमई प्रकोष्ठ का एक वैज्ञानिक सीएसआईआर-निस्ट की ईआरपी क्रियान्वयन टीम का समन्वयक है। सभी तरीकों में आंकड़े का समाहित किया जाना संतोषजनक रूप से आगे बढ़ रहा है। प्रकोष्ठ मुख्य रूप से परियोजना से संबंधित आंकड़े को समाहित करने और सीएसआईआर प्रतिष्ठान बदलाव पोर्टल में निस्ट कर्मचारियों और उनकी भूमिका का पता लगाने में शामिल है।

(12) पीएमई प्रकोष्ठ की विविध गतिविधियों में शामिल हैं :-

ए. कंप्यूटर साफ्टवेयरों का विकास

(1) सभी आय कर के लिए फार्म-16तैयार करना (2) योजना इकाई के लिए मानव संसाधन वेब पोर्टल, कर्मचारी सदस्यों से संबंधित सूचना को प्रदर्शित करने के लिए (3) निदेशक से मिलने के इच्छुक कर्मचारी सदस्यों के लिए वेब आधारित एक 'निदेशक से मिलने की डायरी तैयार करना'।

बी. प्रयोगशाला के नोटबुकों को सूचीबद्ध किया गया है। प्रकोष्ठ भविष्य के संदर्भ और बौद्धिक संपदा अधिकार के लिए इसका रखरखाव कर रहा है। वर्ष के दौरान 86नं. जारी किये गये, 70 नं. या तो लौटा दिये गये या पुन: जारी किये गये।

सी. डिब्रुगढ़ विश्वविद्यालय के एक बीसीए छात्र ने 'सीएसआईआर-निस्ट, जोरहाट में आर एंड डी परियोजनाओं के लिए परियोजना प्रबंधन प्रणाली' शीर्षक परियोजना का अपना अंतिम सेमीस्टर पीएमई प्रकोष्ठ में पूरा किया।

संक्षेप में कहा जाय तो पीएमई इकाई बाहर से प्रायोजित परियोजनाओं के संदर्भ में प्रबंधन के साथ ही वैज्ञानिकों को जरूरी आंकड़ें व रिपोर्टें उपलब्ध कराने के लिए सहायक इकाई के तौर पर कार्य कर रहा है

कार्यशाला/सेमिनार/बैठक आयोजित

चौथी संस्थागत आचारसंहिता समिति की बैठक हुई

सीएसआईआर-निस्ट, जोरहाट की आचारसंहिता समिति की चौथी बैठक 7 मई, 2012 को हुई। सीएसआईआर-निस्ट के निदेशक डॉ. राव ने कहा कि बैठक का मुख्य उद्देश्य पूर्वोत्तर भारत के महत्वपूर्ण औषधीय पौधों से बने हर्बल कैंसर दवा, गठिया रोधी और फफूद रोधी दवाइयों की चिकित्सकीय मूल्यांकन से संबंधित चल रही परियोजनाओं के कार्य की समीक्षा करना है। चाय शोध संस्था के पूर्व निदेशक तथा चेयरमैन डॉ. मृदुल हजारिका ने कहा कि समय के साथ नैतिक मुद्दे भी बदलते रहते हैं और कानूनी तथा नैतिक पहलुओं को देखते हुए दवाइयों की चिकित्सकीय परीक्षण महत्वपूर्ण है, चाहे वह औषधीय पौधों से ही क्यों न बना हो। परियोजना नेता डॉ. बरदलै ने 'पौधा श्रोत से मुंह से खायी जा सकने वाली कैंसर की दवा पर शोध' परियोजना पर अब तक किये गये चिकित्सकीय परीक्षण और जांच की प्रगति की जानकारी दी। साथ ही कैंसर के विकास की प्रणाली तथा दवा के बाद जैविक रूख के बारे में भी उन्होंने बताया। उन्होंने बताया कि औषधीय पौधों से वीबीएनएसटी 011 नामक मिश्रण को अलग कर लिया गया है, जो मुंह के कैंसर वाले कोशिकाओं को प्रदर्शित करता है। आईईसी सदस्यों ने दवा को जानवरों पर परीक्षण करने का सुझाव दिया, ताकि बेहतर नतीजे प्राप्त हो सके। परियोजना नेता डॉ. भुइयां ने भी हर्बल दवाओं, गठिया रोधी, फफूद की बीमारियों व हर्बल फुंगी डेस्ट्रक्ट के चिकित्सीय परीक्षण में प्रगति की जानकारी दी। उन्होंने फेफड़े के कैंसर की दवा और एक औषधीय इनहेलर लुनकेन की प्रगति के बारे में भी जानकारी प्रदान की। कैंसर रोधी मिश्रण के गुणों की पहचान कर ली गयी है। आईईसी सदस्यों ने बीमारी के आरंभिक चरण में इसके चिकित्सकीय जांच का सुझाव दिया, जो दर्द से काफी छुटकारा दिलाता है। आईईसी के सदस्य सचिव डॉ. बीजी उन्नी ने दोनों परियोजना नेताओं से प्रगति रिपोर्ट सौंपने का आग्रह किया।

भारत-नार्वे कार्यशाला

निस्ट-जोरहाट में एक कार्यशाला का आयोजन 8से 12 मई के दौरान किया गया। इस कार्यशाला में नार्वे के विभिन्न शोध शाखों के विशेषज्ञों भूकंपविज्ञान के प्रमुख डॉ. कोनराड लिंधोल्म और एनओआरएसएआर, नार्वे के प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. डेनिएला कुहेन और भारत के वैज्ञानिकों ने हिस्सा लिया। कार्यशाला को मुख्य रूप से तीन भागों में बांटा गया।

पहला हिस्सा : एनओआरएसएआर और सीएसआईआर निस्ट में चल रही परियोजनाओं के बारे में के क्रमश: कोनराड लिंधोल्म और डॉ. सौरभ बरूवा ने संक्षिप्त जानकारी दी।

दूसरा हिस्सा : प्रस्तावित साझा परियोजना के अनुरूप विभिन्न शोध मुद्दों के बारे में कनिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. मनोज के. फुकन और शोध सहायक डॉ. शांतनु बरूवा ने जानकारी दी।

तीसरा हिस्सा : प्रस्तावित साझा मुद्दों पर डॉ. डेनिएला कुहेन द्वारा प्रस्तुति।

तीनों सत्र सकारात्मक नतीजों के साथ संपन्न हुए।

चाय सुधार निकाय (टीआईसी) की समीक्षा बैठक आयोजित

'चाय सुधार निकाय' की स्थिति की समीक्षा के लिए कार्यकारी समिति की बैठक 10 मई, 2012 को सीएसआईआर-निस्ट, जोरहाट में हुई। बैठक की अध्यक्षता सीएसआईआर-निस्ट के निदेशक डॉ. पी.जी. राव ने की। चाय शोध संस्था, जोरहाट के निदेशक डॉ. मुरलीधरन ने टीआईसी के कार्यों की प्रशंसा की। साथ ही उन्होंने टीआईसी की गतिविधियों को सुदृढ़ करने के लिए हरसंभव सहयोग का भरोसा दिया। उन्होंने भविष्य की योजनाओं को तैयार करते समय परियोजना प्रस्तावों में कीटाणुओं के जैव नियंत्रण प्रणाली, भूमि के

अध्ययन और मानव संसासधनों की कमी की स्थिति से निपटने के लिए चाय उद्योग के यांत्रिकीकरण जैसे पहलुओं को शामिल करने का सुझाव टीआईसी को दिया। समिति ने टीआईसी के पंजीयन को भी अतिशीघ्र नवीकरण करने पर बल दिया। समिति ने टीआईसी की सदस्यता को बढ़ाने की जरूरत महसूस की, ताकि सही ढंग से कार्य करने के साथ ही चाय वैज्ञानिकों, चाय उत्पादकों और लघु चाय उत्पादकों के बीच टीआईसी को लेकर जागरूकता बढ़ायी जा सके। समिति ने टीआईसी की पत्रिका को शुरू करने का आग्रह एएयू के डॉ. पी सेन से किया।

सीएसआईआर-निस्ट ने यूएसटी के साथ संयुक्त रूप से उत्तर पूर्व स्नातक कांग्रेस का आयोजन किया।

सीएसआईआर-निस्ट ने विज्ञान व तकनीक विश्वविद्यालय, मेघालय (यूएसटी) के साथ संयुक्त रूप से पहले उत्तर पूर्व स्नातक कांग्रेस का आयोजन 29 व 30 मई 2012 को यूएसटी के परिसर में किया। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता सीएसआईआर-आईएमएमटी, भुवनेश्वर के पूर्व निदेशक डॉ. एच.एस. राय ने की, जिसमें सीएसआईआर-निस्ट के निदेशक डॉ. पी.जी. राव ने सम्मानित अतिथि के तौर पर हिस्सा लिया। दोनों दिन सलाह और प्रेरण, उच्च/व्यावसायिक शिक्षा और अनुसंधान, सूक्ष्म वित्त, व्यावसायिक ऋण, लघु उद्योग, सरकारी योजनाएं व उद्यमिता, व्यक्तित्व विकास, प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में कौशल व क्षमता का विकास तथा रोजगार, व्यावसायिक प्रशिक्षण, युवा राजनीति व भ्रष्टाचार और प्रतियोगी परीक्षाएं विषय पर तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया। प्रतिभा अवार्ड के लिए प्रतिभागियों का चयन 30 मई, 2012 को किया गया। तीस मई, 2012 को ही हुए समापन समारोह में असम के राज्यपाल माननीय जानकी बल्लभ पटनायक मुख्य अतिथि के तौर पर उपस्थित थे।

उद्घाटन समारोह में बोलते हुए सीएसआईआर-निस्ट के निदेशक डॉ. पी.जी. राव।

सीएसआईआर-निस्ट ने भूगर्भ-विज्ञान व खनन, कोयला व खनिज की उत्तर पूर्व क्षेत्र में उपयोगिता पर गहन चर्चा सत्र का आयोजन किया

निस्ट, जोरहाट में 7 व 8अगस्त 2012 को भूगर्भ-विज्ञान व खनन, कोयला व खनिज की उत्तर पूर्व क्षेत्र में उपयोगिता शीर्षक गहन चर्चा सत्र का आयोजन किया गया। पूर्वोत्तर परिषद के सदस्य व सीएसआईआर-निस्ट के आरसी सदस्य श्री पी. पी. श्रीवास्तव, सीएसआईआर-निस्ट के सलाहकार (पदार्थ विज्ञान) तथा एएमपीआरआई, भोपाल के पूर्व निदेशक प्रो. टी. सी. राव, एनएफटीडीसी, हैदराबाद के निदेशक डॉ. के. बालासुब्रमण्यम, इंडियन स्कूल ऑफ माइन्स, धनबाद के प्रो. निक्कम सुरेश, मेघालय के खनिज संपदा निदेशालय के संयुक्त निदेशक डॉ. ई. लालू, असम सरकार के भूगर्भ-विज्ञान व खनन विभाग की संयुक्त निदेशक सुश्री दीप्ति दास, नगालैंड के भूगर्भ-विज्ञान व खनिन निदेशालय के संयुक्त निदेशक श्री ए. टेमजेनटोशी और वरिष्ठ भू-वैज्ञानिक श्री मार इमचेन, अरूणाचल सरकार के भूगर्भ-विज्ञान व खनन विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ. डी. के. चुतिया व भू-वैज्ञानिक डॉ. ए. एस. रावत और सीएसआईआर-निस्ट के वरिष्ठ वैज्ञानिकों ने इस चर्चा में हिस्सा लिया। पूर्वोत्तर क्षेत्र में पाये जाने वाले कुछ कीमती खनिजों खासकर अरूणाचल प्रदेश के ग्रेफाइट भंडार, नगालैंड के पोकफुर और मणिपुर के एनआई-सीओ वाले मेग्नेटिट भंडार, मेघालय के काओलिन (चीनी मिट्टी) के खनन व प्रसंस्सकरण उद्योग का दायरा, मेघालय में चूना पत्थर खनन और प्रसंस्सकरण उद्योग का दायरा, स्वच्छ कोयला तकनीक के राष्ट्रीय प्राथमिकता और स्वच्छ पर्यावरण के आलोक में सुवनसिरी घाटी और पूर्वोत्तर के अन्य इलाकों के कोयले में पाये जाने वाले प्लेसर गोल्ड के दायरे और भविष्य की संभावना को लेकर चर्चा की गयी। पूर्वोत्तर के खनिज क्षेत्र के लिए एक कार्ययोजना भी तैयार की गयी। अरूणाचल प्रदेश के तीन भंडारों (बोपी, ला-लामडक और तलिहा) से एकत्र किये गये ग्रेफाइट नमूनों को और लाभकारी बनाने के लिए पहल की गयी।

सीएसआईआर-निस्ट के एम. एस. आयेंगर सभागार में आयोजित गहन चर्चा सत्र का एक दृश्य।

शोध पत्र लिखने पर एक दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन

मणिपुर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एच. नंदकुमार शर्मा कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए।

सीएसआईआर-निस्ट के इंफाल सबस्टेशन ने अपने परिसर में मणिपुर विज्ञान व तकनीक परिषद (एमएएसटीईसी) के सहयोग से 4 सितंबर, 2012 को 'शोध पत्र लिखने' पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में मणिपुर विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. एच नंदकुमार, इसी विश्वविद्यालय के जीव विज्ञान विभाग के प्रमुख प्रो. जीएनके छेत्री और प्रो. बी मनिहार शर्मा तथा सीएसआईआर-निस्ट के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. बीजी उन्नी क्रमश: मुख्य अतिथि, सम्मानित अतिथि और अध्यक्ष के तौर पर उपस्थित थे। तकनीकी सत्र में (i) प्रो. एन राजमोहन सिंह ने 'वैज्ञानिक पत्र लेखन' (ii) डॉ. बीजी उन्नी ने 'एक अच्छा शोध-पत्र कैसे लिखा जाय' और (iii) डॉ. एचबी सिंह ने 'एक शोध-पत्र लिखने की उचित योजना' पर प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में मणिपुर विश्वविद्यालय, असम विश्वविद्यालय, एनईआरआईएसटी-इटानगर, जीपी महिला कॉलेज-इंफाल, पेटीग्रीउ कॉलेज-उखरूल आदि के 27 शोधकर्ताओं, व्याख्याता, सहायक प्रोफेसर व संबद्ध प्रोफेसरों ने हिस्सा लिया। तकनीकी सत्र के बाद समूह परिचर्चा का आयोजन भी किया गया।

'पूर्वोत्तर राज्यों में कायर तकनीक को लोकप्रिय बनाने' पर राष्ट्रीय सेमिनार

सीएसआईआर-निस्ट ने पूर्वोत्तर क्षेत्र में विभिन्न कायर तकनीकों को लोकप्रिय बनाने को लेकर केंद्रीय कायर शोध संस्थान, केरल के सहयोग से 6व 7 नवंबर, 2012 को एक सेमिनार का आयोजन किया। इस सेमिनार के आयोजन का उद्देश्य उद्यमियों/एनजीओ/एसएचजी और लघु उद्योगपतियों के बीच कायर से संबंधित उपक्रमों को स्थापित करके उद्यमिता को बढ़ावा देने तथा आसानी से उपलब्ध कच्चे सामान का इस्तेमाल करते हुए आत्मनिर्भर बनने के साथ ही विभिन्न उपलब्ध तकनीकों की जानकारी प्रदान करके जागरूकता को बढ़ावा देना था। सेमिनार का उद्घाटन सीएसआईआर-निस्ट के निदेशक डॉ. पीजी राव ने किया। कायर बोर्ड के सदस्य श्री सुब्रत हजारिका उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के तौर पर उपस्थित थे। रिसोर्स पर्सन के तौर पर निस्ट, जोरहाट के वैज्ञानिकों के साथ सीपीआरआई, केरल; नाबार्ड, जोरहाट और नारियल विकास बोर्ड, गुवाहाटी के पदाधिकारी उपस्थित थे। कायर तकनीकों के बारे में कायर बोर्ड के अंतर्गत सीसीआरआई, केरल के डॉ. एस राधाकृष्णन व श्री सीके जयानंद ने बताया। साथ ही कायर बोर्ड की योजनाओं और भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में इस तरह के उद्योगों को स्थापित करने की संभावना के बारे में भी जानकारी दी। प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. टी गोस्वामी, वैज्ञानिक डॉ. दिपुरल कलिता और सीएसआईआर-निस्ट के कनिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. जतिन कलिता ने विभिन्न मुद्दों जैसे कायर उद्योग को स्थापित करने की संभावना, भवन निर्माण में कायर रेशे की उपयोगिता, पूर्वोत्तर राज्यों में विभिन्न कायर तकनीकों की अर्थनीति और व्यावहारिकता पर व्याख्यान दिया। असम के सभी जिलों से आये 100 से ज्यादा प्रतिभागियों पर सेमिनार का व्यापक प्रभाव पड़ा।

'सामाजिक विकास के लिए वैज्ञानिक पहल' पर संगोष्ठी

बायें : पूर्वोत्तर परिषद, शिलांग के सदस्य तथा मुख्य अतिथि श्री पी पी श्रीवास्तव दीप जलाकर संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए, जबकि सीएसआईआर-निस्ट के निदेशक डॉ. पी जी राव (दायें से दूसरे) और जाने-माने वैज्ञानिक डॉ. आर सी बरूवा देखते हुए।
दायें : संगोष्ठी में भाग ले रहे लोग।